H.W.

पाठ - 1
कबीर

शब्द	अर्थ
सुभर	स्वच्छ
हंसा	हंस
मुकताहल	हंस का एक पर्यायवाची
मुकता	मोती
अनत	अन्यत्र, और कहीं
प्रेमी	ईश्वर
फिरौं	फिरता हूँ
हस्ती	हाथी
सहज	सिद्ध और नाथ संप्रदाय में प्रचलित ध्यान
दुलीचा	गद्दी
डारि	डालकर
स्वान	कुत्ता
झखमारि	अकारण, किसी न किसी बहाने से
पखापखी	पक्ष - विपक्ष
कारनै	कारण
निरपख	निष्पक्ष
सुजान	चतुर
जीवता	जीवित
निकटि	निकट
काबा	मुसलमानों का पवित्र तीर्थस्थान

Shot on Y83 Pro
vivo dual camera

थूँनी	स्तंभ , टेक
बलिंडा	छप्पर की मजबूत मोटी लकड़ी
छाँनि	छप्पर
भाँडा फूटा	भेद खुला
निरचू	थोड़ा सा
चुवै	चूता है
बूठा	बरसा
खीनाँ	क्षीण हुआ

Shot on Y83 Pro
vivo dual camera

प्रश्न - उत्तर

प्र० 1→ मानसरोवर से कवि का क्या आशय है?

उ० 1→ मानसरोवर के दो अर्थ है:
एक पवित्र सरोवर जिसमें हंस विहार करते हैं।
पवित्र मन या मानस।

प्र० 2→ कवि ने सच्चे प्रेमी की क्या कसौटी बताई है?

उ० → कवि के अनुसार सच्चे प्रेमी की कसौटी यह है कि उससे मिलने पर मन की सारी मलिनता नष्ट हो जाती है। पाप धुल जाते हैं।

प्र० 3→ तीसरे दोहे में कवि ने किस प्रकार के ज्ञान को महत्व दिया है?

उ० → इस दोहे में अनुभव से प्राप्त आध्यात्मिक ज्ञान को महत्व दिया गया है।

प्र० 4→ इस संसार में सच्चा संत कौन कहलाता है?

उ० → कबीर के अनुसार, सच्चा संत वह है जो साम्प्रदायिक भेदभाव, तर्क-वितर्क और वैर-विरोध के झगड़े में न पड़कर निश्चल भाव से प्रभु की भक्ति में लीन रहता है।

Shot on Y83 Pro
vivo dual camera

प्र० 5→ अंतिम दो दोहो के माध्यम से कबीर ने किस तरह की संकीर्णताओं की ओर संकेत किया है?

उ० → अंतिम दो दोहों में कबीर ने निम्नलिखित संकीर्णताओं और दूसरे संकेत किया है-

(क) अपने अपने मत को श्रेष्ठ मानने की संकीर्णता और दूसरे के धर्म की निंदा करने की संकीर्णता

(ख) ऊँचे कुल के अहंकार में जीने की संकीर्णता

प्र० 6→ किसी भी व्यक्ति की पहचान उसके कुल से होती है या उसके कर्मों से? तर्क सहित उत्तर दीजिए।

उ० → किसी भी व्यक्ति की पहचान उसके कर्मों से होती है, न कि ऊँचे कुल से। आज तक हजारों राजा पैदा हुए और मर गए। परंतु लोग जिन्हें मानते हैं, वे हैं- राम, कृष्ण, बुद्ध, महावीर, आदि। इन्हें इसलिए जाना गया क्योंकि ये केवल कुल से ऊँचे नहीं थे, बल्कि इन्होंने ऊँचे कर्म किए। इनके विपरीत कबीर, सूर, तुलसी बहुत सामान्य घरों से थे। इन्हें बचपन में ठोकरें भी खानी पड़ी। परंतु फिर भी वे अपने श्रेष्ठ कर्मों से संसार भर में प्रसिद्ध हो गए। इसलिए हम कहते हैं कि महत्व ऊँचे कर्मों का होता है, कुल का नहीं।

Shot on Y83 Pro
vivo dual camera

सबद (पद)

प्र० 1- मनुष्य ईश्वर को कहाँ-कहाँ ढूँढता फिरता है?

उ०- मनुष्य ईश्वर को मंदिर, मसजिद, काबा, कैलाश, योग, वैराग्य तथा विविध पूजा-पद्धतियों में ढूँढता फिरता है। कोई अपने देवता के मंदिर में जाता है, कोई मसजिद में जाता है। कोई उसे अपने तीर्थ स्थलों में खोजता है। कोई योग-साधना या संन्यास में परमात्मा को खोजता है। कोई अन्य किसी भावना-पद्धति को अपनाकर ईश्वर को खोजता है।

प्र० 2- कबीर ने ईश्वर-प्राप्ति के लिए किन-किन प्रचलित विश्वासों का खण्डन किया है?

उ०- कबीर ने ईश्वर-प्राप्ति के प्रचलित विश्वासों का खण्डन किया है। उनके अनुसार ईश्वर न मंदिर में है, न मसजिद में, न काबा में है, न कैलाश आदि तीर्थ यात्रा में, वह न कर्मकाण्ड करने में मिलता है, न योग साधना से, न वैरागी बनने से। ये सब ऊपरी दिखावे हैं, ढोंग हैं। इनमें मन लगाना व्यर्थ है।

प्र० 3- कबीर ने ईश्वर को 'सब स्वाँसों की स्वाँस में' क्यों कहा है?

उ०- कबीर के अनुसार, ईश्वर घट-घट में

Shot on Y83 Pro
vivo dual camera

व्याप्त है। वह सांस-सांस में समाया हुआ है। वह हर प्राणी के मन में विराजमान है।

प्र० 10→ कबीर के ज्ञान के आगमन की तुलना सामान्य हवा से न कर आँधी से क्यों की?

उ० → कबीर के अनुसार, जब प्रभु-ज्ञान का आवेश होता है तो उसका प्रभाव चमत्कारी होता है। उससे पूरी जीवन-शैली बदल जाती है। सांसारिक बंधन पूरी तरह कट जाते हैं। यह परिवर्तन धीरे-धीरे नहीं होता, बल्कि एकाएक और पूरे वेग से होता है। इसलिए उसकी तुलना सामान्य हवा से न करके आँधी से की गई है।

प्र० 11→ ज्ञान की आंधी का भक्त के जीवन पर क्या प्रभाव पड़ता है?

उ० → ज्ञान की आँधी के आने से भक्त के मन के सारे पाप नष्ट हो जाते हैं। इसके बाद उसके मन से भ्रम दूर हो जाते हैं। माया, मोह, स्वार्थ, घन, तृष्णा, कुबुद्धि आदि विकार समाप्त हो जाते हैं। इसके बाद उसके शुद्ध मन में भक्ति और प्रेम की वर्षा होती है जिससे जीवन में आनंद का ही आनंद छा जाता है।

Shot on Y83 Pro
vivo dual camera

प्र० (2) भाव स्पष्ट कीजिए -
(क) हिति चित्त की द्वै थूँनी गिराँनी, मोह बलिंडा तूटा।

उ० इसका भाव यह है कि ईश्वरीय ज्ञान के आने से स्वार्थ चिंतन समाप्त हो गया तथा सांसारिक मोह नष्ट हो गया।

(ख) आँधी पीछै जो जल बूठा, प्रेम हरि जन भींनाँ।

उ० इसका भाव यह है कि ईश्वरीय ज्ञान हो जाने के बाद प्रभु - प्रेम के आनंद की वर्षा हुई। उस आनंद मे भक्त का हृदय पूरी तरह सराबोर हो गया।

17/8/19

Shot on Y83 Pro
vivo dual camera